3   प्रतिभाशाली बालिकाओं को मिली स्कूटी

5   संघ से निकले राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति

7   अस्थिरता के दौर से गुजरता नेपाल

RNI-MPBIL/2011/39805 DAVP/134083/25

निष्पक्ष और निर्भीक साप्ताहिक

जगत प्रवाह

वर्ष : 16 अंक : 19 प्रति सोमवार, 15 सितंबर 2025 मूल्य : दो रुपये पृष्ठ : 8

भाजपा विधायक सुदेश राय ने किया अभद्र भाषा का प्रयोग

प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल को बदनाम करने के लिए मंत्री नेताओं की यह सोची समझी चाल तो नहीं

कवर स्टोरी

-विजया पाठक
एडिटर

बिहार में राहुल गांधी की यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी मां पर की गई अशोभनीय टिप्पणी को लेकर मचा बवाल अभी शांत भी नहीं हुआ था कि मध्यप्रदेश के सीहोर में भाजपा विधायक सुदेश राय का गाली देते हुए एक और वीडियो सामने आ गया है। मध्यप्रदेश की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी लंबे समय से सत्ता और संगठन दोनों स्तरों पर मजबूती से जमी हुई है। लेकिन बीते कुछ समय से पार्टी के विधायकों, मंत्रियों और नेताओं के व्यवहार को लेकर लगातार सवाल उठ रहे हैं। आए दिन जनता के साथ बत्तमीजी, गाली-गलौज और अभद्रता के मामले सामने आ रहे हैं, जिसने पार्टी की छवि को धूमिल करना शुरू कर दिया है। यह पहली बार नहीं है जब ऐसे घटनाक्रम सामने आए हों। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा के कार्यकाल के दौरान भी कई बार नेताओं की हरकतें सुर्खियों में रही थीं। अब

हेमंत खंडेलवाल के प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद इस तरह के मामले तेजी से तूल पकड़ रहे हैं।

जनता के साथ बततमीजी की घटनाएँ

बीते कुछ महीनों में प्रदेश भर से अलग-अलग स्थानों से भाजपा नेताओं के जनता के साथ अभद्र व्यवहार की शिकायतें आती रही हैं। कभी किसी मंत्री को आम नागरिक पर गुस्सा करते हुए कैमरे में कैद किया गया, तो कभी किसी विधायक को गाली-गलौज करते सुना गया। भिंड कलेक्टर से बीजेपी विधायक नरेंद्र कुशवाह की अभद्रता का मामला सामने आया। पार्टी ने सख्ती दिखाते हुए चेतावनी तक दी। वहीं मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने ग्वालियर में एक रेस्टोरेंट में रेस्टोरेंट मालिक से काफी अभद्रता की। बाद में मंत्री नरेन्द्र पटेल को सफाई देनी पड़ी। प्रदेश के मंत्री विजय शाह ने कर्नल सोफिया पर बेहद अभद्र टिप्पणी की थी, जिसके बाद पूरे देश में मंत्री और बीजेपी की काफी किरकिरी हुई थी। उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने भी विवादित बयान देकर सेना का अपमान किया। (शेष पेज 2 पर)

छत्तीसगढ़ में धान तस्करी रोकने की दिशा में बड़ा कदम, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने लिया ऐतिहासिक फैसला

-विजया पाठक

छत्तीसगढ़ के लोकप्रिय मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने किसानों के हित में एक महत्वपूर्ण और दूरगामी फैसला लिया है। राज्य में धान तस्करी जैसी गंभीर समस्या को रोकने के लिए सरकार ने विशेष पहल की है। इसके तहत अब राज्य में एक स्पेशल टीम का गठन किया जाएगा, जो धान की अवैध खरीद-फरोख्त और परिवहन पर सख्ती से निगरानी रखेगी। सरकार का उद्देश्य है कि किसानों का धान सही तरीके से खरीदा जाए, उन्हें उनके मेहनत की पूरी कीमत मिले और कोई भी बीच का दलाल या अवैध व्यापारी उनका हक न मार सके। प्रदेश में धान की खरीद-फरोख्त से जुड़ी समस्याएँ लंबे समय से बनी हुई थीं।

कई बार यह देखा गया है कि धान की आपूर्ति में अनियमितता, गलत माप, अवैध परिवहन और तस्करी के कारण किसानों को समय पर भुगतान नहीं मिल पाता। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री साय ने राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक कर एक विशेष टीम बनाने का निर्णय लिया। इस टीम में प्रशासन, पुलिस, खाद्य विभाग और स्थानीय स्तर के प्रतिनिधि शामिल होंगे, ताकि धान की तस्करी को जड़ से खत्म किया जा सके। स्पेशल टीम का कार्य सिर्फ तस्करी रोकना ही नहीं होगा, बल्कि धान खरीद केंद्रों पर होने वाली गड़बड़ियों की जाँच, परिवहन में पारदर्शिता सुनिश्चित करना और किसानों के लिए शिकायत निवारण तंत्र तैयार करना भी होगा। टीम को विशेष अधिकार दिए जाएंगे ताकि वे आवश्यकता पड़ने पर कड़ी कार्रवाई कर सकें।

रियल टाइम मॉनिटरिंग से मिलेगा पारदर्शिता का लाभ

धान खरीद प्रक्रिया को पारदर्शी और समयबद्ध बनाने के लिए सरकार ने रियल टाइम मॉनिटरिंग प्रणाली लागू करने का निर्णय लिया है। इसके तहत खरीद केंद्रों पर जितनी मात्रा में धान खरीदा जा रहा है, उसका डेटा सीधे संबंधित अधिकारियों के पास पहुँचेगा। खरीद की प्रक्रिया शुरू होते ही, परिवहन, भंडारण और भुगतान की स्थिति की निगरानी की जाएगी। इस प्रणाली के अंतर्गत जिला स्तर से लेकर राज्य स्तर तक अधिकारी नियुक्त किए जाएंगे। (शेष पेज 2 पर)

विकास के नाम पर प्रदेश की जनता को कर्ज के बोझ तले दबाती मोहन सरकार

सरकार द्वारा लिया गया यह कर्ज. क्या आने वाली पीढ़ियों के लिए आर्थिक संकट का कारण बनेगा ?

-विजया पाठक

मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की सरकार एक बार फिर से वित्तीय वर्ष के दौरान चार हजार करोड़ रुपये का नया कर्ज लेने जा रही है। यह निर्णय प्रदेश की जनता, अर्थव्यवस्था और भविष्य की पीढ़ियों के लिए कई सवाल खड़े कर रहा है। क्या प्रदेश की आर्थिक स्थिति ऐसी हो चुकी है कि बार-बार कर्ज लेकर योजनाएँ चलाई जा रही हैं? क्या यह कदम आवश्यक है या फिर अनावश्यक खर्चों के लिए उठाया जा रहा है? क्या निवेश और विकास के नाम पर आयोजन किए जा रहे हैं, जिन पर अरबों रुपये खर्च हो रहे हैं, जबकि प्रदेश पहले से ही कर्ज के बोझ तले दबा है?

जनता की कमाई से बनता है बजट, फिर कर्ज क्यों?

प्रदेश का वार्षिक बजट जनता की गाढ़ी कमाई से बनता है। टैक्स के रूप में जमा होने वाले हर पैसे का हिसाब जनता से लिया जाता है। जब प्रदेश की जनता अपने करों के माध्यम से आर्थिक सहयोग करती है तो यह उम्मीद की जाती है कि उसका उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, बुनियादी ढाँचे और रोजगार जैसे क्षेत्रों में होगा। (शेष पेज 3 पर)

छत्तीसगढ़ में धान तस्करी रोकने की दिशा में बड़ा कदम, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने लिया ऐतिहासिक फैसला

(पेज 1 का शेष)

ये अधिकारी समय-समय पर खरीद केंद्रों का निरीक्षण करेंगे और सुनिश्चित करेंगे कि किसानों का भुगतान निर्धारित समय पर हो। इससे किसानों को बीच के बिचौलियों की दखलंदाजी से बचाया जाएगा और उन्हें उनकी उपज का उचित मूल्य मिलेगा।

किसानों का पैसा सही समय पर पहुँचे, सरकार की प्राथमिकता

मुख्यमंत्री साय ने स्पष्ट कहा है कि किसानों का पैसा समय पर पहुँचना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। धान तस्करी और भ्रष्टाचार के चलते कई बार किसानों को अपनी उपज का मूल्य पाने में महीनों लग जाते थे। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति प्रभावित होती थी और वे कर्ज के बोझ तले दब जाते थे। अब रियल टाइम मॉनिटरिंग से यह सुनिश्चित होगा कि धान की खरीद होते ही भुगतान प्रक्रिया प्रारंभ हो और निर्धारित समय में किसानों के खातों में राशि जमा हो। साथ ही, यदि किसी केंद्र पर गड़बड़ी पाए जाने पर संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। इससे न केवल किसानों का विश्वास बढ़ेगा बल्कि खेती में नई ऊर्जा का संचार होगा।

भूतपूर्व सरकार की लापरवाहियों पर सरकार का प्रहार

राज्य में धान खरीद की समस्या कोई नई नहीं है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के कार्यकाल में धान खरीद की व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई थी। कई रिपोर्टों में सामने आया था कि खरीद केंद्रों पर किसानों को लंबी कतारों में खड़ा रहना पड़ता था और समय पर भुगतान नहीं मिलता था। तस्करी की घटनाओं में वृद्धि हुई थी, जिससे किसानों की आमदनी पर नकारात्मक असर पड़ा था। वर्तमान सरकार ने इन समस्याओं को गंभीरता से लिया और कहा कि पिछली व्यवस्था में किसानों के हितों की अनदेखी की गई थी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने किसानों को आश्वस्त किया कि उनकी सरकार ऐसी कोई गलती दोहराने नहीं देगी। उन्होंने यह भी कहा कि किसानों की मेहनत का पूरा मूल्य उन्हें मिलना चाहिए और कोई भी अधिकारी या व्यापारी इसमें बाधा नहीं बनेगा।

एग्री स्टेक किसान पोर्टल से मिलेगा लाभ

धान खरीद प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाने के लिए सरकार ने एग्री स्टेक किसान पोर्टल का उपयोग करने का निर्णय लिया है। इस पोर्टल पर किसान अपना पंजीकरण कर सकते हैं और सभी योजनाओं का लाभ आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। पोर्टल के माध्यम से धान खरीद, भुगतान की स्थिति, परिवहन और शिकायत निवारण की जानकारी किसानों को ऑनलाइन उपलब्ध होगी। इस पहल से ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल सेवाओं का विस्तार होगा और किसानों को सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे मिलेगा। साथ ही, पोर्टल पर पंजीकरण से खरीद केंद्रों पर अनियमितता की संभावना कम होगी और सरकार की योजनाएँ अधिक प्रभावी बनेंगी।

किसानों के हित में एक बड़ा बदलाव

यह पहल न केवल धान की तस्करी को रोकने का प्रयास है, बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इससे किसानों को समय पर भुगतान मिलेगा, भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा और धान खरीद प्रक्रिया में पारदर्शिता आएगी। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह योजना सफल रही तो अन्य राज्यों के लिए भी एक आदर्श बन सकती है। इससे किसानों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता प्रदर्शित होगी और खेती को लाभकारी व्यवसाय में बदलने की दिशा में नई राह खुलेगी। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का यह निर्णय छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए आशा की किरण है। धान तस्करी जैसी समस्या का समाधान करके, रियल टाइम मॉनिटरिंग लागू कर और एग्री स्टेक पोर्टल के माध्यम से पारदर्शिता सुनिश्चित कर, सरकार ने यह संदेश दिया है कि किसानों का सम्मान और हित सर्वोपरि है। अब देखना यह होगा कि यह पहल कितनी प्रभावी रूप से लागू होती है और किसानों को इसका कितना लाभ मिलता है।

प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल को बदनाम करने के लिए मंत्री नेताओं की यह सोची समझी चाल तो नहीं

(पेज 1 का शेष)

2024 में भोपाल में भाजपा नेता कामता पाटीदार द्वारा महिला एसडीओ से अभद्रता की गई। सोशल मीडिया के दौर में ये वीडियो और बयान तेजी से वायरल हो जाते हैं, जिससे आम जनता में असंतोष और नेताओं के प्रति अविश्वास की भावना बढ़ती है।

क्या यह साजिश है?

राजनीतिक हलकों में यह चर्चा भी तेज है कि कहीं यह घटनाएँ सुनियोजित रूप से तो नहीं हो रही हैं। सवाल उठ रहे हैं कि क्या भाजपा नेताओं के इन विवादित बयानों और व्यवहारों के पीछे पार्टी के भीतर ही कोई राजनीतिक खींचतान है? क्या यह प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल को बदनाम करने की साजिश हो सकती है? क्योंकि जिस तरह से लगातार घटनाएँ घट रही हैं, उससे यह संदेश जाने लगा है कि नए नेतृत्व के हाथों में संगठन नियंत्रण से बाहर है।

सत्ता और संगठन के लिए चुनौती

मंत्री और नेताओं का इस तरह का व्यवहार केवल जनता को निराश नहीं करता, बल्कि सत्ता और संगठन दोनों के लिए चिंता का विषय है। सरकार के मंत्री जब जनता से सीधे संवाद में असंयमित भाषा का प्रयोग करते हैं, तो शासन-प्रशासन की विश्वसनीयता पर भी सवाल उठता है। संगठन की दृष्टि से देखें तो कार्यकर्ताओं का मनोबल भी प्रभावित होता है। कार्यकर्ता जनता के बीच जाकर पार्टी की नीतियों का प्रचार करें और जनता से सुनने को मिले कि उनके नेता अभद्र हैं- यह स्थिति निश्चित रूप से संगठन के लिए चुनौतीपूर्ण है।

यह नहीं है पहला अवसर

यह पहला मौका नहीं है जब भाजपा नेताओं पर ऐसे आरोप लगे हों। वीडी शर्मा के प्रदेश अध्यक्ष रहते भी कई बार विधायकों और मंत्रियों के विवादित बयान और व्यवहार सुर्खियों में रहे थे। कभी जनता से भिड़ने की घटनाएँ सामने आईं, तो कभी अधिकारियों के साथ अभद्रता की शिकायतें। इन घटनाओं ने भाजपा की छवि को पहले भी आघात पहुँचाया था। फर्क केवल इतना है कि अब यह घटनाएँ अधिक नियमितता के साथ सामने आ रही हैं।

पचमढ़ी बैठक के परिणाम?

पिछले दिनों भाजपा ने पचमढ़ी में शिष्टाचार बैठक आयोजित की थी, जिसका उद्देश्य संगठन और सरकार के बीच बेहतर तालमेल बनाना था। लेकिन सवाल यह उठ रहा है कि क्या जनता के सामने आ रही इन घटनाओं से उस बैठक का यही परिणाम है? जनता तो यही मान रही है कि बैठकों में केवल दिखावटी संदेश दिए जाते हैं, जबकि जमीन पर नेताओं का व्यवहार बदलने का कोई असर नहीं दिखता। अगर पिछले एक वर्ष का रिकॉर्ड देखें तो भाजपा के कई मंत्री और विधायक अलग-अलग मामलों में विवादित बयानबाजी या बर्ताव को लेकर चर्चा में रहे हैं।

विपक्ष ने साधा हमला

कांग्रेस ने भाजपा नेताओं के इन व्यवहारों को "जनता का अपमान" करार दिया है। विपक्ष कह रहा है कि भाजपा के मंत्री और विधायक जनता के सेवक नहीं, बल्कि शासक की तरह व्यवहार कर रहे हैं। कांग्रेस ने यह भी सवाल उठाया है कि जब जनता के सामने नेताओं का रवैया ऐसा है, तो प्रशासनिक स्तर पर आम नागरिकों के साथ कैसा व्यवहार होता होगा। स्थिति स्पष्ट रूप से यह संकेत देती है कि भाजपा को अब आत्ममंथन की आवश्यकता है।

भविष्य की राजनीति पर असर

अगर यह प्रवृत्ति जारी रही तो इसका असर भाजपा की भविष्य की राजनीति पर गंभीर रूप से पड़ सकता है। जनता अब सजग है और हर घटना सोशल मीडिया पर तुरंत वायरल हो जाती है। मध्यप्रदेश भाजपा के सामने यह एक गंभीर चुनौती बन चुकी है। जनता के साथ नेताओं का असंयमित व्यवहार केवल व्यक्तिगत छवि को नहीं, बल्कि पूरी पार्टी को नुकसान पहुँचा रहा है। प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल को यह साबित करना होगा कि वे संगठन को अनुशासन और मर्यादा के रास्ते पर चलाने में सक्षम हैं। अगर ऐसा नहीं हुआ, तो विपक्ष इस मुद्दे को भुनाकर भाजपा के लिए बड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकता है।

विकास के नाम पर प्रदेश की जनता को कर्ज के बोझ तले दबाती मोहन सरकार

(पेज 1 का शेष)

लेकिन हाल की आर्थिक नीतियों और लगातार कर्ज लेने की प्रक्रिया ने आम नागरिक के मन में चिंता पैदा कर दी है। राज्य पर पहले ही 4,21,740.27 करोड़ रुपये का कर्ज था। कुछ ही महीनों पहले 4800 करोड़ रुपये का कर्ज लिया गया और अब एक बार फिर चार हजार करोड़ रुपये का नया कर्ज जोड़ दिया जाएगा। इस प्रकार, कुल कर्ज बढ़कर 4,53,640.27 करोड़ रुपये हो जाएगा। यह आंकड़ा स्वयं में भयावह है। इतनी बड़ी राशि का कर्ज प्रदेश की आर्थिक सेहत पर कितना प्रभाव डालेगा, यह सोचने का विषय है।

यह कर्ज विकास के लिए है या दिखावे के लिए?

सरकार कहती है कि कर्ज का उपयोग विकास कार्यों के लिए किया जाएगा। विशेष रूप से निवेश लाने के लिए आयोजनों और विदेशी दौरों पर खर्च किया जा रहा है। लेकिन सवाल यह है कि क्या निवेश के नाम पर होने वाले आयोजनों से वास्तविक लाभ मिल रहा है? करोड़ों रुपये की राशि विज्ञापन, आयोजन स्थल, आतिथ्य और यात्रा पर खर्च की जा रही है। क्या इन खर्चों का परिणाम प्रदेश के किसानों, युवाओं, शिक्षकों या गरीब वर्ग तक पहुँच रहा है? प्रदेश की जनता अब सवाल कर रही है कि क्या यह कर्ज लेकर विदेश यात्राओं को अंजाम दिया जा रहा है? क्या निवेश के नाम पर केवल शो-पीस आयोजन किए जा रहे हैं, जिनके नतीजे अब तक धरातल पर स्पष्ट नहीं हैं? विकास योजनाओं का प्रभाव तब दिखता है जब सड़कें बनती हैं, स्कूल सुधरते हैं, अस्पतालों में दवाइयाँ मिलती हैं और युवाओं को रोजगार मिलता है। जबकि बार-बार कर्ज लेकर योजनाओं का दिखावा कर आर्थिक बोझ बढ़ाना जनता की समझ से परे है।

पूर्ववर्ती सरकार की राह पर वर्तमान नेतृत्व?

पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के कार्यकाल में भी कई बार कर्ज लिया गया था। विकास कार्यों के नाम पर योजनाएँ चलाई गईं, लेकिन कर्ज की राशि लगातार बढ़ती रही। अब यह सवाल उठ रहा है कि क्या वर्तमान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी उसी राह पर चल रहे हैं, जहाँ कर्ज बढ़ता है और जनता का आर्थिक बोझ भारी होता जाता है? विशेषज्ञों का मानना है कि कर्ज का उपयोग यदि सही योजनाओं में हो तो यह आर्थिक विकास को गति दे सकता है। लेकिन यदि इसका उपयोग दिखावे, प्रचार और अनुत्पादक कार्यों पर हो तो यह प्रदेश की आर्थिक स्थिति को संकट में डाल सकता है। यही आशंका अब प्रदेश के नागरिकों में बढ़ती जा रही है।

आर्थिक बोझ का प्रभाव, आज और आने वाले कल पर

कर्ज की इस बढ़ती राशि का सबसे बड़ा प्रभाव आम नागरिक पर पड़ता है। जब सरकार कर्ज लेती है तो उसे ब्याज सहित चुकाना होता है। इसका बोझ आखिरकार जनता पर ही आता है। टैक्स बढ़ते हैं, सरकारी सेवाओं में कटौती होती है और योजनाओं का विस्तार धीमा पड़ता है। भविष्य में राज्य की वित्तीय स्थिति ऐसी हो सकती है कि आवश्यक सेवाओं के लिए भी धन की कमी हो जाए। विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों में कटौती का संकट पैदा हो सकता है। गरीब और मध्यम वर्ग पहले ही महँगाई और बेरोजगारी की मार झेल रहा है। ऐसे में कर्ज का बढ़ना उसकी स्थिति को और जटिल बना सकता है।

संतुलन की आवश्यकता

निवेश लाना किसी भी राज्य की प्रगति के लिए आवश्यक है। लेकिन निवेश के नाम पर किए जा रहे आयोजनों का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। निवेश तभी उपयोगी है जब उससे उद्योग लगें, रोजगार उत्पन्न हो और युवाओं को स्थायी अवसर मिलें। इसके साथ ही कर्ज का उपयोग प्राथमिकताओं के आधार पर किया जाना चाहिए। पहले आवश्यक बुनियादी सुविधाएँ सुनिश्चित करें, फिर बड़े आयोजनों की योजना बनाएं। प्रदेश को ऐसे निवेश की आवश्यकता है जो दीर्घकालिक लाभ प्रदान करे, न कि अल्पकालिक दिखावा। योजनाओं का मूल्यांकन समय-समय पर करना होगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि जनता का पैसा सही दिशा में खर्च हो रहा है।

जनता की आवाज कर्ज के खिलाफ चिंताएँ

प्रदेश का बच्चा-बच्चा अब तक मोहन सरकार के कर्ज लेने की इस परेशानी से त्रस्त है। आम नागरिक अब यह पूछ रहा है कि क्या विकास के नाम पर कर्ज की राह ही अपनाई जाएगी? क्या प्रदेश का भविष्य आर्थिक संकट की ओर बढ़ेगा? क्या करदाता की मेहनत से जुटाया गया पैसा प्रचार और पर्यटन पर खर्च होता रहेगा? सोशल मीडिया, जनसभाओं और नागरिक मंचों पर कर्ज को लेकर सवाल उठ रहे हैं। प्रदेश के विशेषज्ञ, अर्थशास्त्री और समाजसेवी भी चेतावनी दे रहे हैं कि आर्थिक अनुशासन आवश्यक है। यदि समय रहते कर्ज की योजना नहीं सुधारी गई तो आने वाले वर्षों में राज्य पर आर्थिक संकट गहरा सकता है। कर्ज कोई बुरी चीज नहीं, यदि उसका उपयोग विकास की दिशा में किया जाए। लेकिन जब कर्ज का उपयोग दिखावे, यात्रा और अनुत्पादक आयोजनों पर हो, तब यह राज्य की आर्थिक स्थिरता को नुकसान पहुँचा सकता है। डॉ. मोहन यादव की सरकार को चाहिए कि वह पारदर्शिता से बताए कि नया कर्ज किस उद्देश्य के लिए लिया जा रहा है। निवेश की योजनाओं का स्पष्ट रोडमैप जनता के सामने रखा जाए। पूर्ववर्ती सरकार की राह पर चलने से बचना होगा। आर्थिक अनुशासन, प्राथमिकताओं का संतुलन और जनता की भागीदारी के साथ ही मध्यप्रदेश का भविष्य सुरक्षित हो सकता है। प्रदेश की जनता करों के रूप में योगदान देती है ताकि योजनाएँ उसकी जीवन-स्तर को बेहतर बना सकें, न कि केवल प्रचार और दिखावे के लिए धन खर्च हो। आर्थिक नीति में स्पष्टता, जनहित को प्राथमिकता और जिम्मेदारी का भाव ही कर्ज की समस्या का समाधान है। यदि ऐसा नहीं हुआ तो यह कर्ज प्रदेश की आने वाली पीढ़ियों के लिए आर्थिक संकट का कारण बन सकता है।

प्रतिभाशाली बालिकाओं को मिली स्कूटी राशि के स्वीकृत पत्र

-प्रमोद बरसले

जगत प्रवाह. टिमरनी। प्रदेश सरकार द्वारा शासकीय स्कूलों की 12वी कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 7,832 विधार्थियों को स्कूटी क्रय हेतु राशि अंतरित की गई। पेट्रोल स्कूटी के लिए विधार्थियों को रु 90,000 तथा ई-स्कूटी के लिए रु 1,20,000 की राशि उनके खातों में भेजी गई है। शासकीय कन्या शाला टिमरनी की दो होनहार छात्राएं कुमारी राधिका एवं कुमारी पूनम को स्कूटी राशि के स्वीकृत पत्र प्रदान किए गए। यह पत्र पूर्व नगर परिषद उपाध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र शर्मा, भाजपा जिला मंत्री श्रीमती निशा सुनील दुबे, पार्षद प्रीति बंसल एवं पार्षद सुनील दुबे द्वारा सौंपे गए। इस अवसर पर प्राचार्य दिनेश सोनी, भागवत कटारे, सुचिता दुबे, मुकेश तिवारी, महेंद्र राय, शाहिद और शिक्षक गण एवं छात्राएं मौजूद थी। साथ ही बालिकाओं के पालको का भी सम्मान किया गया। डॉ. राजेन्द्र शर्मा ने सभी बालिकाओं को भविष्य की शुभकामनाएं दी। पार्षद सुनील दुबे ने कहा कि बच्चों तुम खूब पढ़ो, खूब लिखों और आगे बढ़ो, भाजपा सरकार द्वारा आपके सपनों की राह में कोई बाधा नहीं आने दी जाएगी।

सम्पादकीय

नेपाल में तख्तापलट से आखिर किस देश को होगा फायदा?

नेपाल में हाल ही में हुए तख्तापलट ने दक्षिण एशिया की राजनीति में एक बार फिर अस्थिरता की चिंता पैदा कर दी है। यह छोटा हिमालयी राष्ट्र न केवल भारत और चीन के बीच रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन का केंद्र भी है। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि नेपाल में सत्ता परिवर्तन या अस्थिरता का सबसे अधिक फायदा किसे होगा। क्या यह बदलाव नेपाल के आंतरिक राजनीतिक संकट का परिणाम है या किसी बाहरी शक्ति का प्रभाव? इस संपादकीय में हम नेपाल की भौगोलिक स्थिति, राजनीतिक परिदृश्य, आर्थिक निर्भरता और वैश्विक शक्तियों के हितों का विश्लेषण करते हुए यह समझने का प्रयास करेंगे कि तख्तापलट से आखिर किस देश को फायदा होने की संभावना है। नेपाल भारत और चीन के बीच स्थित है। उत्तर में चीन का तिब्बत क्षेत्र और दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में भारत की सीमाएँ हैं। इसके अलावा नेपाल समुद्र तक पहुँच से वंचित है, इसलिए व्यापार और परिवहन के लिए भारत पर उसकी निर्भरता ऐतिहासिक रूप से अधिक रही है। वहीं, बीते कुछ वर्षों में चीन ने भी नेपाल में निवेश बढ़ाकर अपनी पकड़ मजबूत करने का प्रयास किया है। नेपाल का भूराजनीतिक महत्व इस बात में है कि यह हिमालयी क्षेत्र में सुरक्षा, व्यापार, जल संसाधन और रणनीतिक सहयोग का केंद्र बन सकता है। इसलिए कोई भी अस्थिरता क्षेत्रीय शक्तियों के हितों को प्रभावित कर सकती है।

भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा, सांस्कृतिक रिश्ते, व्यापार, ऊर्जा और जल संसाधनों पर साझा हित हैं। नेपाल में अस्थिरता से भारत को सबसे बड़ा खतरा सीमा पार से अवैध गतिविधियों, हथियारों की तस्करी और कट्टरपंथी विचारधाराओं के फैलाव का है। इसके अलावा, नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता से भारत के साथ चल रहे जल परियोजनाओं, व्यापार मार्गों और बुनियादी ढाँचे के सहयोग पर असर पड़ सकता है। हालाँकि, भारत की कूटनीतिक पकड़ मजबूत है। नेपाल में राजनीतिक संकट के दौरान भारत शांति, स्थिरता और लोकतांत्रिक मूल्यों की वकालत कर सकता है। भारत की दीर्घकालीन नीति नेपाल को विकास साझेदार बनाने की रही है। यदि संकट लंबा खिंचता है और नेपाल की राजनीति चीन पर निर्भर हो जाती है, तो भारत को रणनीतिक नुकसान हो सकता है। इसके उलट, यदि भारत नेपाल को आर्थिक और राजनीतिक सहयोग देकर उसकी लोकतांत्रिक संस्थाओं को समर्थन देता है, तो यह भारत की साख को मजबूत कर सकता है।

चीन लंबे समय से "बेल्ट एंड रोड पहल" (BRI) के तहत नेपाल में अपनी उपस्थिति बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। नेपाल में अस्थिरता चीन को निम्न लाभ दे सकती है संकट के समय चीन आर्थिक सहायता, ऋण या निवेश देकर नेपाल के भीतर अपने समर्थक नेताओं को प्रोत्साहित कर सकता है। यदि नेपाल चीन की ओर झुकता है तो वह हिमालय क्षेत्र में चीन के व्यापार और सुरक्षा हितों को मजबूती देगा। नेपाल में चीन समर्थक सरकार आने से भारत की परंपरागत भूमिका चुनौती में पड़ सकती है। नेपाल में अस्थिरता से अमेरिका और यूरोप जैसी ताकतों की चिंता भी बढ़ सकती है। वे लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करने, मानवाधिकारों की रक्षा करने और क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने की दिशा में नेपाल के साथ सहयोग करना चाहेंगे। परंतु उनकी पहुँच सीमित है; नेपाल में निवेश या प्रभाव बढ़ाने में भारत और चीन जैसी पड़ोसी शक्तियों की भूमिका ही प्रमुख रहती है। नेपाल में तख्तापलट से सबसे अधिक फायदा चीन को हो सकता है, जो संकट का लाभ उठाकर अपने आर्थिक और रणनीतिक प्रभाव को बढ़ाना चाहेगा। भारत को सतर्क रहकर लोकतांत्रिक मूल्यों का समर्थन करते हुए नेपाल की स्थिरता सुनिश्चित करनी होगी। अन्य अंतरराष्ट्रीय शक्तियाँ भी सहयोग कर सकती हैं, परंतु भौगोलिक समीकरणों के कारण दक्षिण एशिया में भारत और चीन की भूमिका सबसे निर्णायक बनी रहेगी। नेपाल की स्थिरता क्षेत्रीय शांति, आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संपर्क के लिए आवश्यक है– यही इस संकट का सबसे बड़ा सबक है।

सियासी गहमागहमी

राजनीति के दो धुरंधर एक हुए!

कांग्रेस आलाकमान ने मानो जादू की छड़ी घुमाई और हो गया कमाल। जो दूरी वर्षों से पहाड़ बनकर खड़ी थी, वह एक ही झटके में मिट्टी का ढेर बन गई। दिग्विजय सिंह और कमलनाथ– दो अलग-अलग खेमों के धुरंधर– अब गले मिलते दिखाई दे रहे हैं। जैसे किसी पुराने धारावाहिक में आखिरी एपिसोड में चरित्रों को मिलाने की जल्दी हो। कभी एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप करने वाले ये नेता अब मुस्कुराकर कहते दिख रहे हैं– "भाई, चलिए साथ चलते हैं।" राजनीति में यह दृश्य उतना ही अप्रत्याशित है जितना मानसून में अचानक धूप निकल आना। शायद आलाकमान ने इन्हें समझाया– "देश को चलाना है, लड़ाई नहीं।" अब देखिए, वर्षों की खटास पर मानो लोकतांत्रिक डिटर्जेंट का लेप कर दिया गया हो। पुराने झगड़े जैसे बस प्रेस नोट की दो लाइनों में समा गए। अंततः यह समझ में आ गया कि विचारधारा से ज्यादा महत्वपूर्ण है कुर्सी का समीकरण। आखिर राजनीति में रिश्ते भी टिकट की तरह होते हैं– समय आने पर बनते हैं, समय जाने पर टूटते हैं। दिग्विजय और कमलनाथ की यह नई दोस्ती शायद लोकतंत्र का नया नाटक है– जिसमें हर किरदार को समय-समय पर भूमिका निभानी ही होती है।

पटवारी को मुख्यमंत्री यादव ने बताया सबसे बड़ा दुश्मन

राजनीति का रंग देखिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश की बहनों के सामने जीतू पटवारी को "सबसे बड़ा दुश्मन" घोषित कर दिया। मानो चुनावी मंच नहीं, कोई महाभारत चल रही हो और जीतू पटवारी कौरवों की सेना का सेनापति हो! इतना तीखा शब्द– "सबसे बड़ा दुश्मन" – सुनकर तो लगा कि अब बहनों को घर लौटते समय कंधे पर ढाल और हाथ में तलवार लेकर चलना होगा। यह नया राजनीतिक शृंगार शायद वोटों का कवच बनाने का तरीका है। जनता का ध्यान मुद्दों से हटाकर शत्रु की पहचान कराओ, ताकि वोट अपने आप जुटें। आज दुश्मन कोई नीति नहीं, कोई समस्या नहीं– बल्कि व्यक्ति है! मानो सत्ता की लड़ाई में विचार, विकास, शिक्षा, रोजगार सब गौण और व्यक्तिगत विरोध ही प्रमुख हो गया हो। सवाल यह भी है कि दुश्मन की परिभाषा कब बदलती है? चुनाव आते ही जो विरोधी है, वही दुश्मन, चुनाव बाद वही मित्र! राजनीति में रिश्ते वैसे ही हैं जैसे मौसम– कभी गर्म, कभी ठंडा, कभी बरसात। आज जीतू पटवारी दुश्मन हैं, कल गठबंधन में सहयोगी भी हो सकते हैं। शायद यही लोकतंत्र की कला है– विरोध को अवसर में बदल देना।

हफ्ते का कार्टून

ट्वीट-ट्वीट

बिहार की इन युवा बेटियों की समझ, हौसला और सपने सब प्रेरणादायक हैं। मगर NDA सरकार की उपेक्षा उनके साथ सबसे बड़ा धोखा है - जो इन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा जैसे बुनियादी अधिकार तक नहीं दे पाई। हम उनकी आवाज दबने नहीं देंगे। हर बेटी अपने सपनों को पूरा करेगी - ये वादा है।

-राहुल गांधी

कांग्रेस नेता @RahulGandhi

मध्य प्रदेश में किसानों के प्रति भाजपा सरकार का व्यवहार अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। किसानों को जब जिस चीज की जरूरत होती है, तब उसकी आपूर्ति न करना भाजपा सरकार की आदत बन गई है। एक व्यापक षड्यंत्र के तहत हर समय किसानों का उत्पीड़न किया जा रहा है।

-कमलनाथ

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष

@OfficeOfKNath

राजवीरों की बात

संघ की शाखा से निकले राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति पद पर निर्वाचित

समता पाठक/जगत प्रवाह

चंद्रपुरम पोन्नुसामी राधाकृष्णन 20 अक्टूबर 1957 को तमिलनाडु के तिरुप्पुर में जन्मे। बचपन से ही सामाजिक कार्यों एवं सार्वजनिक जीवन की ओर झुकाव रहा और उन्होंने वहीं से राजनीति और संगठन कार्य में कदम रखा जहाँ से उनका सफर आरंभ हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। बचपन में ही खेलों और शारीरिक गतिविधियों में रुचि थी, वे टेबल टेनिस के खिलाड़ी रहे हैं, लंबे दूरी की दौड़ में भी भाग लेते हैं और क्रिकेट एवं वॉलीबॉल जैसे खेलों से भी जुड़े रहे हैं। राधाकृष्णन की राजनीतिक सक्रियता का आरंभ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से हुआ। युवा अवस्था में ही RSS एवं बाद में जनसंघ से जुड़े, जो बाद में भारतीय जनता पार्टी बनी। 1974 में जनसंघ के राज्य कार्यकारिणी सदस्य बने, इसके बाद पार्टी संगठन में विभिन्न जिम्मेदारियाँ निभाईं।

1998 में उन्होंने कोयम्बटूर तमिलनाडु से लोकसभा चुनाव लड़ा और जीते। इसके बाद 1999 में पुनः लोकसभा सांसद बने। इन सांसद के रूप में उन्होंने विभिन्न संसदीय समितियों में काम किया, जैसे टेक्सटाइल आदि। उन्होंने संसद की विशेष टीमों में भी हिस्सा लिया जैसे कि Stock Exchange Scam जाँच समिति आदि। 2004-2007 के बीच राधाकृष्णन ने तमिलनाडु भाजपा के राज्य अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। इस दौरान उन्होंने कई यात्राएँ की, जन-जागरूकता योजनाएँ चलाईं और पार्टी को दक्षिण भारत में सशक्त बनाने की रणनीति बनाई। 2016-2020 में वे कोयर बोर्ड के अध्यक्ष रहे, जहाँ इस अवधि में भारत की कोइर निर्यात ने रिकॉर्ड स्थापित किया। 2020-2022 के बीच उन्होंने केरल के लिए भाजपा के प्रभारी के रूप में कार्य किया।

उनकी भूमिका सक्रिय राजनीतिक नेतृत्व से संवैधानिक पद की ओर बढ़ती गई। फरवरी 2023 में उन्होंने झारखंड के राज्यपाल के रूप में शपथ ली। बाद में उन्हें तेलंगाना के राज्यपाल तथा पुदुचेरी के उपराज्यपाल का अतिरिक्त प्रभार दिया गया। 31 जुलाई 2024 को उन्होंने महाराष्ट्र के राज्यपाल के रूप में पद संभाला। 2025 में उपराष्ट्रपति पद पर निर्वाचित हुए। उन्हें एनडीए द्वारा उम्मीदवार बनाया गया और उन्होंने पहला-वोटिंग चरण में 452 मत प्राप्त कर विपक्षी उम्मीदवार बी. सुदर्शन रेड्डी को हराया। उन्होंने भारत के 15वें उपराष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें 'समर्पित जनसेवक' कहा है और आशा जताई है कि वे नैतिक मूल्यों, संवैधानिक मूल्यों और संसदीय परंपराओं को सशक्त करेंगे। उनके कार्य-शैली में दक्षिण भारत की राजनीति के परदे पीछे के गठबंधनों और दल-दल की जटिलताओं में संतुलन बना कर चलने की कला देखी जाती है। सीपी राधाकृष्णनन का राजनीतिक सफर संगठन, लोकसभा सांसद, पार्टी अध्यक्ष, संवैधानिक पदाधिकारी और अब उपराष्ट्रपति होने तक विविध और गहरा रहा है। उन्होंने संगठनात्मक क्षमता, संयमित राजनीतिक दृष्टिकोण और जनता से जुड़ाव के गुण दिखाए हैं। संवैधानिक पदों पर रहते हुए उनके सामने उत्तरदायित्व बढ़े हैं, विशेषकर उपराष्ट्रपति पद में, जहाँ उन्हें राजगृह और राज्यसभा के संचालन सहित लोकतांत्रिक मर्यादाओं और संवैधानिक संतुलन की भूमिका निभानी है।

हिन्दी: केवल एक भाषा नहीं, भारत की आत्मा का स्वर

आज की बात

प्रवीण कक्कड़
स्वतंत्र लेखक

प्रत्येक राष्ट्र की एक आत्मा होती है, एक धड़कन होती है, जो उसके करोड़ों नागरिकों को एक सूत्र में बाँधती है। भारत के लिए वह धड़कन, वह आत्मिक स्वर हमारी हिन्दी है। यह केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति की गंगोत्री, हमारी भावनाओं का सेतु और हमारी राष्ट्रीय एकता का सबसे सशक्त आधार है। हिन्दी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है क्योंकि 1949 में इसी दिन संविधान सभा ने इसे भारत की राजभाषा का गौरव प्रदान किया था। हिन्दी दिवस का अवसर केवल एक भाषा का उत्सव नहीं, बल्कि उस शक्ति को पहचानने का आह्वान है, जो भारत को 'भारत' बनाती है। आज जब दुनिया अपनी-अपनी भाषाई जड़ों पर गर्व कर रही है, हमें भी यह समझना होगा कि हिन्दी को केवल पाठ्यपुस्तकों या सरकारी फाइलों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह हमारे विचारों, व्यवहार और सपनों में जीने वाली भाषा बने। यही असली उद्देश्य होना चाहिए।

पहचान और स्वाभिमान का प्रतीक

हिन्दी भारत की वह डोर है जो कश्मीर से कन्याकुमारी और अरुणाचल से गुजरात तक हर भारतीय के दिल को जोड़ती है। जब हम अपनी मातृभाषा में सोचते, बोलते और सपने देखते हैं, तो हमारी अभिव्यक्ति गहरी और सच्ची होती है। अपनी भाषा को अपनाना अपनी जड़ों को सींचना है; यह उस आत्म-सम्मान को जगाना है, जो हमें विश्व पटल पर आत्मविश्वास से खड़ा करता है।

ज्ञान और नवाचार की भाषा

यह एक स्थापित सत्य है कि मौलिक चिंतन और रचनात्मकता का अंकुरण मातृभाषा में ही सबसे बेहतर होता है। यदि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में हिन्दी को ज्ञान की मुख्यधारा की भाषा बनाया जाए, तो हम अपने युवाओं की वास्तविक क्षमता को सामने ला सकेंगे। आत्मनिर्भर भारत का सपना तभी साकार होगा, जब ज्ञान हर भारतीय तक उसकी अपनी भाषा में पहुँचेगा।

बाज़ार और भविष्य की शक्ति

डिजिटल क्रांति के इस युग में हिन्दी एक वैश्विक शक्ति बनकर उभरी है। आज करोड़ों लोग इंटरनेट पर हिन्दी में पढ़ते, लिखते और संवाद करते हैं। ई-कॉमर्स से लेकर मनोरंजन तक, हिन्दी एक विशाल बाजार की भाषा है। जो कंपनियाँ इस शक्ति को पहचानेंगी, वे व्यावसायिक सफलता के साथ-साथ करोड़ों भारतीयों के दिलों तक भी पहुँच पाएँगी। हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक रणनीतिक अवसर भी है।

राष्ट्रीय चेतना और हमारा दायित्व

सरकारें अपनी नीतियों से हिन्दी को बढ़ावा देने का प्रयास करती रही हैं, लेकिन किसी भी भाषा का वास्तविक विकास केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं होता। इसके लिए समाज को आगे आना होगा। जब दफ्तरों की बैठकों, विद्यालयों की कक्षाओं, सामाजिक आयोजनों और घर की बातचीत में हिन्दी गर्व से बोली जाएगी, तभी यह भाषा सच्चे अर्थों में राष्ट्रभाषा कहलाएगी।

गौरवशाली विरासत: एक नज़र में

उत्पत्ति: हिन्दी की जड़ें हज़ारों वर्ष प्राचीन 'वैदिक संस्कृत' में हैं, जो विश्व की सबसे पुरानी ज्ञात भाषाओं में से एक है। समय के साथ यह आम जन की भाषा 'प्राकृत' और फिर 'अपभ्रंश' के रूपों से विकसित हुई, जिससे आधुनिक हिन्दी का जन्म हुआ।

विकास यात्रा: 10वीं शताब्दी में ब्रज, अवधी और अन्य बोलियों से ऊर्जा लेकर खड़ी बोली ने आधुनिक हिन्दी की नींव रखी।

साहित्यिक गंगा: कबीर के दोहे, तुलसीदास की चौपाइयाँ, सूरदास के पद, प्रेमचंद की कहानियाँ और हरिवंश राय बच्चन की कविताएँ—हिन्दी साहित्य ने विश्व को मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत परिचय दिया।

ऐतिहासिक क्षण: 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया। इसी दिन की स्मृति में हम प्रतिवर्ष 'हिन्दी दिवस' मनाते हैं।

साल दर साल बढ़ता प्राकृतिक आपदाएं चिंता का विषय

पर्यावरण की फिक्र

डॉ. प्रशांत सिन्हा
पर्यावरणविद्

बीते कुछ सालों में प्राकृतिक आपदाओं का सिलसिला लगातार बढ़ता ही जा रहा है। वह चाहे 2013 की केदारनाथ की आपदा हो या 2021 में ऋषिगंगा की आपदा हो, सिक्किम की 2023 की ल्होनक में ग्लेशियर झील फटने की घटना हो, जोशीमठ की घटना हो, इस साल धराली की घटना हो, कुल्लू, मंडी में बादल फटने की घटना, लद्दाख में हिम स्खलन की घटना हो, वैष्णव देवी की घटना इसके अलावा मैदानों में पंजाब में 1,900 गांव बाढ़ से प्रभावित हुए जिससे 4,00,000 एकड़ फसल की भूमि जलमग्न हुई और 3,84 लाख लोग प्रभावित हुए। यह 1988 के बाद सबसे भयंकर बाढ़ मानी जा रही है। पिछले साल भी केरल के वायनाड जिले में भूस्खलन हुआ था जिसमें बहुत जान माल का नुकसान हुआ था। विश्व मौसम विज्ञान संगठन की जलवायु जल वैज्ञानिक डॉ. लीसा कटिज के अनुसार, पहले जिस बारिश को" सदी में एक बार" होने वाली घटना माना जाता था, अब कुछ इलाकों में हर कुछ वर्षों में हो रही है। 2023 में नेचर पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन में पाया गया कि 1950 के दशक के बाद से भारत के अधिकांश हिस्सों में अत्यधिक बारिश की घटनाएं लगातार बढ़ रही है, विशेषकर हिमाचल, उत्तराखंड और जम्मू कश्मीर जैसे क्षेत्रों में। इन सबके पीछे जलवायु परिवर्तन एक अहम कारण है ही मॉनसून कहें या मौसम में आए अप्रत्याशित बदलाव, अरब सागर में गर्म होती हवाएं, मध्य एशिया में तेजी से बढ़ता तापमान और दक्षिण पश्चिमी हवाओं का उत्तर की ओर झुकाव के साथ उत्तर भारत के हिमालयी क्षेत्रों में बारिश का तूफानी पैटर्न तो है ही इसके अलावा सबसे बड़ा कारण प्रकृति में इंसानी दखल भी है जिसका खामियाजा हम भीषण तबाही के रूप में साल दर साल ऐसी आपदाओं के नतीजे के रूप में भुगत रहे हैं। अब तो ये आपदाएं आए दिन की बात हो गई है। इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता। असलियत यह है कि यह सब प्राकृतिक आपदाएं हमारी नीतिगत विफलताओं का जीता जागता सबूत हैजबकि बरसों से समूची दुनिया के वैज्ञानिक, पर्यावरणविद और समय समय पर जारी रिपोर्ट शोध और अध्ययन चेतावनी दे रहे हैं कि पहाड़ों पर अवैज्ञानिक और अनियोजित निर्माण, पहाड़ों को काटकर या विस्फोट के जरिए नदियों पर जलविद्युत परियोजनाओं, रेलमार्ग का निर्माण, बेतहाशा खुदाई, नदी नालों के कुदरती मार्गों में अवरोध पैदा करने से आपदाओं को हम खुद ब खुद निमंत्रण दे रहे हैं। किंतु विकास के नाम पर सरकारी लापरवाही आलम यह है कि संवेदनशील भूस्खलन वाले इलाकों में भी बहुमंजिला इमारतों, आवासीय भवनों, होटलों और सड़कों का निर्माण आज भी अनियंत्रित रूप से निर्बाध गति से जारी है। यहां यह गौरतलब है कि जब धरती का सतह बार बार जब खोदी जाती है पहाड़ों का सीना बारंबार चीरा जाता है काटा जाता है उस स्थिति में बारिश की हर बूंद उस नाजुक धरातल को चीरते हुए बहुत तेजी से बह निकलती है नतीजन मिट्टी की पकड़ ढीली पड़ती है आपदा का आकार कई सौ गुणा बढ़ जाता है। यही कारण है कि ऐसी स्थिति में पहाड़ों पर भूस्खलन का दायरा लगातार बढ़ता ही जा रहा है। वैज्ञानिक बार बार चेता रहे हैं कि जलवायु में आ रहे बदलाव और पहाड़ों पर विकास के नाम पर अंधाधुंध निर्माण विनाश का कारण बन रहा है। चुकी इस इलाके में अधिकांश नदियां संकरी पाटियों से होकर बहती है बादल फटने पर ग्लेशियर झील के फटने के चलते पानी के तेज बहाव के साथ बड़ी मात्रा में बोल्डर सहित मलवा भी आ जाता है। नतीजन नदियों के रास्ते अवरुद्ध हो जाते हैं और निचले इलाकों में बाढ़ की स्थिति बन जाती है। उसी प्रकार मैदानों में जंगलों और नदियों में अतिक्रमण करके आपदा को बुलाया जा रहा है। आजादी के समय भारत में जो आपदाएं आती थीं उसकी तुलना में आज स्थिति कहीं अधिक गंभीर हो चुकी है। वर्तमान में देश के 40% क्षेत्र सूखा प्रभावित हो चुके हैं जबकि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में 60% से अधिक की वृद्धि हुई है। नए बाढ़ प्रवण क्षेत्र बन रहे हैं और जहां पहले सुखा पड़ता था अब वहां बाढ़ आने लगी है।

प्रकृति की संवेदनशीलता के प्रति हमें अति संवेदनशील होना पड़ेगा। यदि हम प्रकृति से खिलवाड़ करेंगे तो निश्चित है कि हमें ऐसी आपदाओं से आए दिन दो चार होना पड़ेगा। सरकार के साथ हमारी भी जवाबदेही है। हमें और सरकार को भू वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों की संस्तुति चेतावनियों को मानना होगा कि जिन्हें हम बराबर नकारते आ रहे हैं उसका खामियाजा आज भुगत रहे हैं। बाढ़ और सूखे से निपटने के लिए पूर्व चेतावनी प्रणाली और स्थानीय आपदा प्रबंधन योजनाओं को मजबूत करना होगा। शहरी ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में हरित क्षेत्र बढ़ा कर भूमि के कटाव और तापमान वृद्धि को कम करना होगा। यह समय है कि हम अनियोजित विकास के मॉडल को छोड़कर स्थाई और सतत विकास विकास की ओर बढ़ें ताकि भविष्य में आपदाओं के प्रभाव को कम किया जा सके।

अस्थिरता के दौर से गुजरता नेपाल

-प्रमोद भार्गव

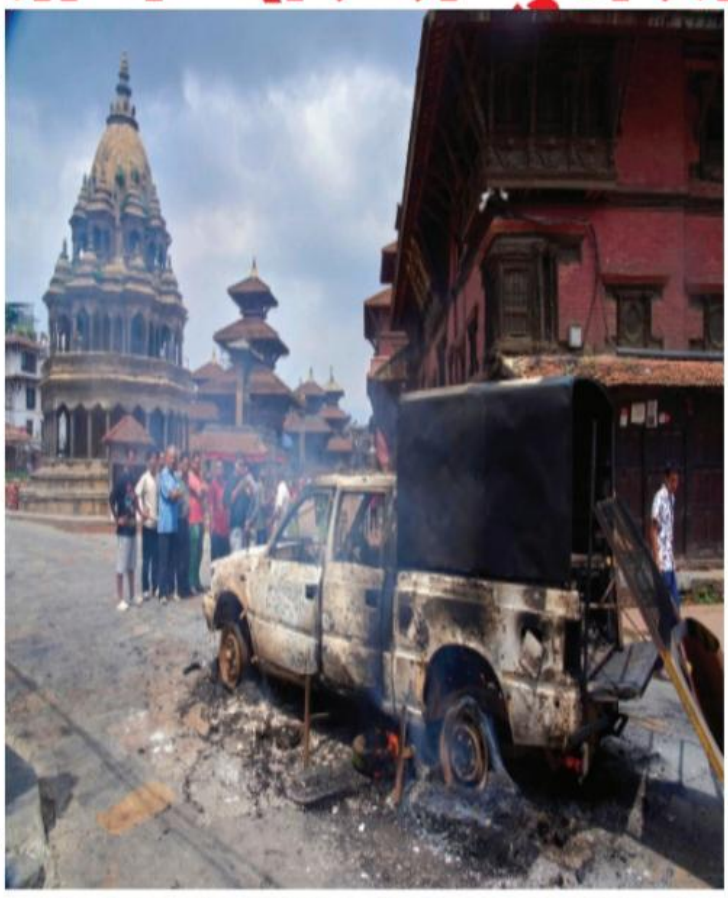

भारत का पड़ोसी देश नेपाल जबसे कम्युनिस्ट देश बना हैं, तब से चीन के दबाव के चलते यहां लगातार अस्थिरता बनी हुई है। इस बार नेपाल भीषण संकट में है। यह संकट इसलिए बढ़ा, क्योंकि राजशाही खत्म होने के बाद संघीय सरकार से युवाओं को अपेक्षा थी कि देश में राजनीतिक स्थिरता तो कायम होगी ही, सरकारी नौकरियों और अन्य रोजगारों की संभावना भी बढ़ेगी। लेकिन 17 साल के गैर राजतांत्रिक नेपाल में 15 सरकारें तो बदलीं, परंतु हालात नहीं बदले। इसी बीच राजशाही और नेपाल को हिंदू राष्ट्र बनाने की मांगे भी उठती रही हैं। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो से जनता को पता चला कि मंत्री और उनके परिजन देश-विदेश में ऐशो-आराम की जिंदगी जी रहे हैं। उनके बच्चे विदेशों में अच्छी शिक्षा ले रहे हैं। ब्रांडेड सामान के साथ फाइव स्टार जीवन विदेशों में व्यतीत कर रहे हैं। इस वैभव की पृष्ठभूमि में सरकारी स्तर पर फैले भ्रष्टाचार को मुख्य कारण माना। जबकि गरीब युवा प्रतिदिन तीन हजार से ज्यादा की संख्या में पलायन करने को विवश हो रहे हैं। इस आंदोलन को पहले दक्षिणपंथी करार देने की कोशिशें हुईं, लेकिन वास्तव में यह आक्रोश उस कुंठा के चलते उपजा जो नेताओं और उनके परिजनों के वीडियों में भोग-विलास का जीवन जीते हुए दिखा।

नेपाल में हिंसा और अराजकता इस हद तक फैली कि आंदोलनकारियों ने संसद भवन, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और मंत्रियों तक के घर जला दिए। प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को इस्तीफा देना पड़ा और पूर्व प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा की पत्नी को जिंदा जला दिया। देश की सत्ता की इस राख में 22 युवाओं की सेना और पुलिस की गोलाबारी में हुई मौतों की राख भी मिल गई। इस आंदोलन को सोशल मीडिया के साथ खासतौर से जेन-जी पर पाबंदी माना जा रहा है। हालांकि यह रोक युवाओं का आक्रोश देखने के बाद हटा ली गई थी। जेन-जी यानी जेनरेशन-जेड का बोध कराने वाली वह पीढ़ी है, जिनका जन्म 1997 से लेकर 2012 के बीच हुआ है। यानी वर्तमान में ये आंदोलनकारी किशोर एवं युवा हैं। इस आग में घी डालने का काम सुदन गुरुंग और बालेन शाह ने जेन-जी पर उपस्थित दर्ज कराकर कर दिया। सुदन ओली सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार और परिवारवाद की मुहिम पूर्व से ही चला रहे थे। कुछ नेताओं की बढ़ती संपत्ति के विरुद्ध भी मोर्चा खोले हुए थे। इसी बीच 4 सितंबर को सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगा दिया गया तो राजधानी काठमांडू के महापौर बालेन शाह सक्रिय हो गए। उन्होंने सोशल मीडिया एक्सेस किया और लिखा, 'कल की रैली जेन-जी की रैली है। इस रैली में कोई भी पार्टी, नेता, सांसद एवं कार्यकर्ता को निजी लाभ के लिए शामिल होने की जरूरत नहीं है। उम्र के कारण मैं जा नहीं सकता, लेकिन मेरा पूरा समर्थन है।' बालेन के चाहने वाले लाखों में हैं। इस पोस्ट को 20,000 से ज्यादा लोगों ने साझा किया। देखते-देखते आंदोलन की दशा और दिशा तय हो गई और लाखों युवा आंदोलन के लिए काठमांडू की सड़कों पर उतर आए। संसद और राष्ट्रपति भवन पर कब्जा कर लिया, प्रधानमंत्री आवास पर पत्थरबाजी की और पूरे शहर में ऐसा तांडव मचाया कि सेना और पुलिस को नियंत्रण के लिए संयुक्त अभियान चलाना पड़ा। नेपाल के इतिहास में इसे बड़ी तख्तापलट की घटना के रूप में देखा जा रहा है। इससे पहले बांग्लादेश और श्रीलंका में भी इसी तरह का जनआक्रोश फूट चुका है। वहां की सरकारें अपदस्थ हुई हैं।

नेपाल में हिंदू राष्ट्र घोषित किए जाने की मांग भी लंबे समय से उठ रही है। वहां अनेक संगठन सड़कों पर उतरकर राजशाही के पक्ष में आंदोलन कर चुके हैं। इस मांग में पुरुशों के साथ महिलाएं भी कंधे से कंधा मिलाकर आंदोलन में शामिल रही हैं। इस मांग को मुख्य रूप से राष्ट्रवादी राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी कर रही है। यह नेपाल की पांचवीं सबसे बड़ी पार्टी है। इस दल के प्रवक्ता मोहन श्रेष्ठ की मांग है कि नेपाल में राजशाही की पुनर्बहाली हो और इसे हिंदू राष्ट्र घोषित किया जाए। नेपाल को 2007 में पंथनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया था। नतीजतन 2008 में राजशाही व्यवस्था समाप्त कर दी गई थी। 2008 में नेपाल के गणराज्य बनने के बाद से कारोबारी दुर्गा प्रसाई आंदोलन को हवा दे रहे हैं। एक समय प्रसाई के प्रधानमंत्री प्रचंड और ओली के साथ घनिष्ठ संबंध थे, लेकिन बाद में वे दोनों के आलोचक हो गए। इसी समय राजशाही के दौर में गृहमंत्री रहे कमल थापा ने हिंदू राष्ट्र की मांग के लिए नया गठबंधन बना लिया है। पूर्व नरेश ज्ञानेंद्र शाह भी एकाएक सक्रिय होकर सार्वजनिक कार्यक्रमों में भागीदारी करने लगे हैं। वह मंदिरों में होने वाली पूजा में शामिल हो रहे हैं।

दरअसल नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी का चीन की गोद में बैठना और भारत विरोधी अभियान चलाना देश की जनता को नागवार गुजर रहा है। नेपाल के मुसलमान भी देश को हिंदू राष्ट्र बनाने के पक्ष में हैं। समाज के कुछ नेताओं का मानना है कि हिंदू राष्ट्र का दर्जा खत्म होने के बाद से नेपाल में ईसाई मिशनरियां ज्यादा सक्रिय हो गई हैं। मिशनरी इस स्थिति का फायदा उठाकर लोगों का धर्म परिवर्तन करवा रही हैं। यूसीपीएन माओवादी के मुस्लिम मुक्ति मोर्चा भी मिशनरियों के बढ़ते प्रभाव को स्वीकार नहीं करता है। राष्ट्रवादी मुस्लिम मोर्चा भी देश की धर्मनिरपेक्ष पहचान नहीं चाहता है। 80 फीसद मुस्लिम आबादी देश की हिंदू पहचान बहाल करने के पक्ष में है।

गौरतलब है कि राजनीतिक दलों के बीच नए संविधान में देश की धर्मनिरपेक्षता की पहचान खत्म करने को लेकर सहमति बनी थी। इसके बाद से यह मांग और तेज हो गई है। देश के सभी समुदाओं के लोग मानते हैं कि पुरानी हिंदू पहचान की बहाली का कोई विकल्प नहीं है। धर्मनिरपेक्षता हिंदू-मुस्लिम एकता तोड़ने की साजिश है। दरअसल सात साल पहले दो नेपाली युवकों को बुटवॉल में पुराने राष्ट्रगान को गाने की वजह से पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। इसके बाद से ही पूरे नेपाल में इस राष्ट्रगान को गाने का सिलसिला चलने के साथ हिंदू राज की पुनर्स्थापना की मांग उठ रही है।

हिमालय की गोद में बसा नेपाल एक छोटा और सुंदर देश है। पूरी दुनिया में नेपाल ही एकमात्र ऐसा देश है, जिसे आज तक कोई दूसरा देश परतंत्र नहीं बना पाया। इसलिए यहां स्वतंत्रता दिवस नहीं मनाया जाता। किंतु चीन के लगातार बढ़ रहे हस्तक्षेप के चलते लोगों को लगने लगा है कि कहीं यह हिंदू धर्मावलंबी देश अपनी मौलिक संस्कृति व स्वतंत्रता न खो दे? नेपाल एक दक्षिण एशियाई देश है। नेपाल के उत्तर में चीन का स्वायत्तशासी प्रदेश तिब्बत है। जिसे चीन निगलता जा रहा है। दक्षिण पूर्व व पश्चिम में भारत की सीमा लगती है। नेपाल की 85.5 प्रतिशत आबादी हिंदू है, इसलिए वह प्रतिशत के आधार पर सबसे बड़ा हिंदू धर्मावलंबी देश है। नेपाल में लंबे समय तक राजशाही रही है। किंतु राजशाही के खूनी दुखद अंत के बाद यहां माओवादी नेता प्रचंड के प्रधानमंत्री बनने से सामंतशाही सिमटती चली गई और 18 मई 2006 को राजा के अधिकारों में कटौती कर नेपाल को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित कर माओवादी लोकतंत्र की शुरूआत हो गई। तभी से चीनी हस्तक्षेप के चलते यहां के मूल स्वरूप को बदलने के अलावा भारत के साथ संबंध खराब होने की शुरुआत भी हो गई थी। केपी शर्मा ओली के प्रधानमंत्री रहते हुए चीन के दबाव में न केवल भारत से शत्रुतापूर्ण संबंधों की बुनियाद रखी थी, बल्कि चीनी सेना को खुली छूट देकर अपनी जमीन भी खोना शुरू कर दी। जाहिर है, नेपाल में लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना तो हो गई, लेकिन लचर नेतृत्व के चलते यह देश अपना अस्तित्व खोने की कगार पर आ खड़ा हुआ है। इसी चिंता से यह आक्रोश उपजा है।

हमारे पड़ोसी देशों में नेपाल और भूटान ऐसे देश हैं, जिनके साथ हमारे संबंध विश्वास और स्थिरता के रहे हैं। यही वजह है कि भारत और नेपाल के बीच 1950 में हुई सुलह, शांति और दोस्ती की संधि आज भी कायम है। नेपाल और भूटान से जुड़ी 1850 किमी लंबी सीमा रेखा बिना किसी पुख्ता पहरेदारी के खुली है। बावजूद चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश की तरह कोई ठोस विवाद नहीं है। बिना पारपत्र के आवाजाही निरंतर जारी है। करीब 60 लाख नेपाली भारत में काम करके रोजी-रोटी कमा रहे हैं। 3000 नेपाली छात्रों को भारत हर साल छात्रवृत्ति देता है। नेपाल के विदेशी निवेश में भी अब तक का सबसे बड़ा 47 प्रतिशत हिस्सा भारत का है। बावजूद यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि नेपाल का झुकाव चीन की ओर बढ़ता जा रहा है। हालांकि नरेंद्र मोदी ने अगस्त 2014 में नेपाल की यात्रा करके बिगड़ते संबंधों को आत्मीय बनाने की सार्थक पहल की थी, किंतु भारतीय मूल के मधेषियों के आंदोलन ने इस पर पानी फेर दिया था।

नेपाल और चीन के बीच द्विपक्षीय संबंधों के तहत ऐतिहासिक पारगमन व्यापार समझौते समेत 10 समझौतों की शुरूआत करके नेपाल ने चीन से रिश्ते मजबूत कर लिए हैं। चीन और नेपाल के बीच तिब्बत के रास्ते रेलमार्ग बनाने पर भी संधि हुई है। चीन ने काठमांडू से करीब 200 किमी दूर पोखरा में क्षेत्रीय हवाई अड्डा निर्माण के लिए नेपाल को 21,000 डॉलर का सस्ती ब्याज दर पर ऋण दिया है। मुक्त व्यापार समझौते पर भी हस्ताक्षर हुए हैं। नेपाल में तेल और गैस की खोज करने पर भी चीन सहमत हुआ है। इसके लिए वह नेपाल को आर्थिक और तकनीकी मदद देने को राजी हो है। चीन ने नेपाल में अपने व्यावसायिक बैंक की शाखाएं भी खोल दी हैं। नेपाली बैंक भी अपनी शाखाएं चीन में खोल रहे हैं। संस्कृति, शिक्षा, भाषा और पर्यटन जैसे मुद्दों पर भी चीन का दखल नेपाल में बढ़ गया है। अर्से से इन्हीं कुटिल कूटनीतिक चालों के चलते कम्युनिष्ट विचारधारा के पोषक चीन माओवादी नेपालियों को अपनी गिरफ्त में लेकर अपनी साम्राज्यवादी लिप्सा को आगे बढ़ा रहा है। इस चीनी लिप्सा के प्रतिरोध में भी यह संकट देखा जा रहा है। अतएव इस तत्काल के संकट को किसी एक दृष्टिकोण से देखा जाना भूल होगी।

फंगस को पहचानें, जीवन बचाएँ : एम्स भोपाल का जागरूकता अभियान

-समता पाठक

जगत प्रवाह. भोपाल। एम्स भोपाल के माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा आईसीएमआर और एनएचएम मध्य प्रदेश के सहयोग से फंगल डिजीज अवेयरनेस वीक (FDAW)–2025 का आयोजन 15 से 19 सितम्बर तक किया जा रहा है। इस पहल का उद्देश्य भारत में बढ़ते फंगल संक्रमणों के बोझ के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। समय पर पहचान और उपचार से रोगियों की बीमारियों और मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है। सप्ताहभर चलने वाले इस कार्यक्रम में स्वास्थ्यकर्मियों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों के लिए वैज्ञानिक सत्र, क्विज और केस डिस्कशन आयोजित किए जाएंगे। कार्यक्रम की विशेष आकर्षण होगी स्कूल शिक्षकों के लिए विशेष सत्र, जिसका संचालन डॉ. अनुपमा हर्षल (STEM मेंटर एवं छात्र शिक्षिका) द्वारा लोढ़ा जीनियस कार्यक्रम के अंतर्गत किया जाएगा। इस सत्र में फोल्डस्कोप माइक्रोस्कोपी का प्रयोग कर शिक्षकों और विद्यार्थियों में फंगल जीवविज्ञान के प्रति वैज्ञानिक जिज्ञासा जगाने का प्रयास किया जाएगा। इसके साथ ही, "फंगल रोग और वन हेल्थ" विषय पर एक राज्यव्यापी ऑनलाइन कार्यक्रम भी आयोजित किया जाएगा, जो विभिन्न क्षेत्रों और स्तरों के बीच अंतःविषय सहयोग को बढ़ावा देगा। प्रो. (डॉ.) देवाशीष विश्वास, विभागाध्यक्ष सूक्ष्मजंतु विज्ञान विभाग एवं प्रो. (डॉ.) माधवानंद कर, कार्यपालक निदेशक, एम्स भोपाल ने इस महत्वपूर्ण पहल को पूर्ण समर्थन प्रदान किया है, जिसका उद्देश्य फंगल रोगों के प्रबंधन, अनुसंधान और जनजागरूकता को सुदृढ़ करना है। "थिंक फंगस, सेव लाइव्स" संदेश के साथ एम्स भोपाल इस दिशा में ठोस कदम उठा रहा है।

अभी तक नहीं हुआ मूंग का भुगतान

-बद्रीप्रसाद कौरव

जगत प्रवाह. नरसिंहपुर। किसानों ने बारिश में भी लाइन में 10 से 15 दिन तक ट्रेक्टर खड़े रखकर अपनी बारी का इंतजार किया, तब जाकर बड़ी मशक्कत के बाद मूंग की तुलाई कार्रवाई। किसानों का आरोप हैं कि सर्वेयार द्वारा अधिकांश किसानों से पैसा लेकर मूंग की तुलाई की गई। महिनों बीत जाने के बाद भी किसानों को मूंग का भुगतान नही हुआ है। किसानों ने बताया कि 24 जुलाई को मूंग बेची थी लेकिन अब तक भुगतान नही हुआ, जब किसान अधिकारियों से पूछता है तो कोई संतोषजनक उतर नही दिया जाता हैं। किसानों का कहना हैं कि जब खरीदी के समय नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए थे तो अब जांच की जरूरत क्यों पढ़ रही है, पहले भी अधिकारियों की लापरवाही से खरीदी प्रक्रिया में किसानों को भारी परेशानी उठानी पडी थी और अब भुगतान ना मिलना किसानों को और भी परेशानी में डाल दिया है। किसानों की चिंता यह भी हैं उन्हें समय पर खाद दवा और अन्य जरूरी संसाधनों के लिए भुगतान की आवश्यकता रहती है, खाद, दवा, बीज का पैसा समय पर न देने से व्यापारी ब्याज वसूलते हैं।

ग्रामीणों ने शराब बिक्री पर लगाया प्रतिबंध, पुलिस को दिया ज्ञापन

-अमित राजपूत

जगत प्रवाह. टेवटीकला। भगवती मानव कल्याण संगठन देवरी ने थाना प्रभारी देवरी को ज्ञापन सौंपकर गांव-गांव में बिक रही अवैध शराब पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की मांग की है। संगठन के कार्यकर्ताओं ने बताया कि वे परमहंस शक्तिपुत्र महाराज के निर्देशन में नशामुक्ति, मांसाहार मुक्ति और जनजागरण अभियान चला रहे हैं, किंतु शराब माफियाओं के कारण समाज में अपराध और घरेलू हिंसा बढ़ रही है। इसी कड़ी में ग्राम चिरचिटा में ग्रामीणों की बैठक आयोजित की गई, जिसमें सर्वसम्मति से शराब विक्रय और सेवन पर रोक लगाने का निर्णय लिया गया। बैठक में तय हुआ कि 12 सितंबर से गांव में कोई भी व्यक्ति शराब का सेवन या बिक्री नहीं करेगा। उल्लंघन करने वालों पर शराब बेचने पर 11 हजार रुपए और शराब पीने या गाली-गलौज करने पर 5100 रुपए का जुर्माना लगाया जाएगा। जुर्माना न भरने पर संबंधित व्यक्ति को गांव से निष्कासित किया जाएगा। इस मौके पर सरपंच भगवती रानी, अरविंद दीक्षित, पुरुषोत्तम बेस, कृष्ण कुमार, मुन्ना सिंह लोधी, किरण, भूरी बाई, संतोषी बाई, चंद्र रानी, कल्पना, संध्या रानी, भारती, लक्ष्मी रानी, सरोज समेत बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

नालियों से हटाया अतिक्रमण, विधायक ने किया अनेक क्षेत्रों में निरीक्षण

-नरेन्द्र दीक्षित

जगत प्रवाह. नवदीपुरम। बारिश के दिनों में नगर के मुख्य बाजार क्षेत्र हलवाई चौक, जय स्तंभ चौक, रविशंकर मार्केट आदि क्षेत्रों में हो रही जलभराव की समस्या का समाधान नगरपालिका प्रशासन की टीम ने कर दिया है। नाले-नालियों पर किए गए अतिक्रमण को पोकलेन, जेसीबी और हेमर मशीन से हटाया गया। एक दुकान जो नाले के ऊपर बनी हुई है उसे खाली कराकर चैंबर्स भी तोड़कर नाले में फंसी फर्सियां भी निकाली गईं। इस कार्रवाई के दौरान सिटी मजिस्ट्रेट ब्रजेंद्र रावत, तहसीलदार, आरआई एवं पुलिस दल के साथ ही नगरपालिका के उपयंत्री अंबक पाराशर, स्वच्छता प्रभारी अनुराग तिवारी, अतिक्रमण दल प्रभारी सुनील राजपूत स्वच्छता दूत और नगरपालिका का अमला उपस्थित रहा। कार्रवाई पर स्थानीय व्यापारियों द्वारा विधायक डॉ. सीताशरण शर्मा, नपाध्यक्ष नीतू महेंद्र यादव एवं मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमेश्वरी पटले का आभार व्यक्त किया गया। इससे पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं विधायक डॉ. सीताशरण शर्मा, विधायक प्रतिनिधि महेंद्र यादव द्वारा बाजार क्षेत्र में चल रही नगरपालिका की कार्रवाई का निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने जल भराव की समस्या का समाधान करने के सख्त निर्देश दिए। जल निकासी समाधान के लिए नगर पालिका प्रशासन द्वारा की जा रही कार्यवाही का सभी व्यापारियों ने सहयोग किया। स्वच्छता निरीक्षक अनुराग तिवारी ने बताया कि पीछे नाले में टूटकर फर्सी फंस गई जिसके चलते जल निकासी में व्यवधान उत्पन्न हो रहा था। दुकान को खाली कराकर जेसीबी और पोकलेन से फर्सियां निकाली गई। पन्नी, कचरा हटाया गया। इस दौरान करीब 12-15 फर्सियां थीं जिसके कारण उस चेंबर में थर्माकोल, पन्नी और कचरे की बंधी पोटली, पत्थर चूना की बोरी भी फंसी पाई गई। सभी को साफ कराया गया है जिससे अब जल निकासी सुचारू हो गई।

प्रशांत किशोर ने बनाया त्रिकोणीय मुकाबला

-विजया पाठक

बिहार में इस साल के आखिर तक होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी पारा चरम पर है। महागठबंधन बनाम एनडीए का पारंपरिक मुकाबला अब जन सुराज पार्टी की एंट्री के साथ त्रिकोणीय जंग में तब्दील होता जा रहा है। प्रशांत किशोर की पार्टी जन सुराज पार्टी भले ही नई हो, लेकिन उनका जमीनी जन संवाद मॉडल और साफ-सुथरी राजनीति की बात ने युवाओं और नए मतदाताओं का ध्यान आकर्षित किया है। अगर प्रशांत किशोर कुछ प्रतिशत वोट काटने में भी सफल रहे, तो इसका सीधा नुकसान एनडीए को होगा और फायदा महागठबंधन को मिल सकता है। उनके मुताबिक तेजस्वी यादव के पास MY (मुस्लिम-यादव) वोट बैंक मजबूत है। कांग्रेस को दलित और अल्पसंख्यक वर्ग से समर्थन मिल सकता है। जन सुराज उन शहरी, नए, नाराज और युवा वोटर्स को लुभा सकती है जो पारंपरिक राजनीति से असंतुष्ट हैं। प्रशांत किशोर ने कहा था कि चाहें 10 सीटें मिले या 0, पर अगर मेरी बात बिहार की जनता समझ गई, तो मुझे इतनी सीटें मिलेंगी कि गिनना मुश्किल हो जाएगा।"PK की रणनीति पारंपरिक चुनाव लड़ने से अलग है। वह 'पदयात्रा और विचार आधारित जनसंपर्क' के जरिए जनता से सीधे जुड़ रहे हैं।

2025 की लड़ाई का यही सच्चाई है। प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी और असदुद्दीन ओवैसी की एआईएमआईएम मुकाबले को त्रिकोणीय या चतुष्कोणीय बनाने की पूरी कोशिश करेंगे पर यह देखना होगा कि इनको अपने मकसद में कितनी सफलता मिलती है। दिल्ली विधानसभा चुनाव के बाद अब सभी की नजरें बिहार विधानसभा चुनाव की ओर टिक गई हैं। राजनीतिक दलों की ओर से कसरत शुरू हो गई है। बयानबाजियां तेज हो गई हैं, नसीहतें दी जा रही हैं और शतरंज के मोहरे सेट किए जा रहे हैं। बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए और राजद के नेतृत्व वाले महागठबंधन के बीच मुख्य मुकाबला हो सकता है। प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी और

बिहार विधानसभा चुनाव

असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम मुकाबले को त्रिकोणीय और चतुष्कोणीय बनाने की कोशिश कर सकते हैं। इसके अलावा मायावती के नेतृत्व वाले बहुजन समाज पार्टी ने भी बिहार की सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया है। यह भी संभव है कि बिहार में एनडीए और महागठबंधन के बीच आमने सामने की लड़ाई को बाकी दलों का गठबंधन त्रिकोणीय बनाने की कोशिश करे।

2020 से बिखरे जनादेश से चला शासन

बिहार विधानसभा चुनाव, 2020 की बात करें तो उस समय एनडीए के खेमे में भारतीय जनता पार्टी के अलावा जनता दल यूनाइटेड, हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा और विकासशील इंसान पार्टी शामिल थे। तब उपेंद्र कुशवाहा महागठबंधन का हिस्सा थे। महागठबंधन के खेमे की बात करें तो सबसे बड़े दल के रूप में राष्ट्रीय जनता दल, कांग्रेस, वाम दल और तत्कालीन राष्ट्रीय लोक समता पार्टी शामिल थी। आज दोनों गठबंधनों में थोड़ा परिवर्तन हुआ है। एनडीए में भाजपा, जेडीयू और हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा यथावत हैं तो मुकेश साहनी अब महागठबंधन का हिस्सा बन चुके हैं। वहीं उपेंद्र कुशवाहा अब एनडीए का हिस्सा हैं और अब उनकी पार्टी का नाम राष्ट्रीय लोक मोर्चा हो चुका है। 2020 के विधानसभा चुनाव में चिराग पासवान की पार्टी लोजपा ने अकेले अपने दम पर विधानसभा चुनाव लड़ा था और वह महज एक सीट जीतने में कामयाब रही थी। बाद में लोजपा में विभाजन हो गया और चिराग पासवान वाले धड़े का नाम लोजपा रामविलास कर दिया गया। वहीं दूसरा खेमा राष्ट्रीय लोजपा हो गया, जो पशुपति कुमार पारस के हवाले है। इस बार पशुपति कुमार पारस ने एनडीए के खिलाफ बिगुल फूंक दिया है और खिचड़ी भोज पर उन्होंने लालू प्रसाद यादव को अपनाया था और वह अपने लिए महागठबंधन में मंजिल तलाश रहे हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में लोजपा 137 सीटों पर लड़ी थी और केवल एक सीट पर जीत हासिल की थी। 09 सीटों पर लोजपा के प्रत्याशी दूसरे नंबर पर रहे थे। 2020 के विधानसभा चुनाव में असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी ने राजद को बड़ा धक्का देते हुए सीमांचल की 5 विधानसभा सीटें जीतने में सफलता हासिल कर ली थी। जानकार कहते हैं कि अगर ओवैसी फैक्टर काम न करता तो आज तेजस्वी यादव बिहार के मुख्यमंत्री होते। इसमें कोई शक भी नहीं है कि ओवैसी फैक्टर सीमांचल इलाके में आज भी मजबूत है। इसलिए असदुद्दीन ओवैसी अपनी इस ताकत को हर हाल में बनाए रखने की कोशिश करते हैं। हालांकि लोकसभा चुनाव में ओवैसी कोई खास कमाल नहीं दिखा पाए थे। इसी तरह पप्पू यादव के नेतृत्व वाले जन अधिकार पार्टी ने भी 33 सीटों पर भाग्य आजमाए थे, लेकिन उनकी पार्टी कोई खास कमाल नहीं दिखा पाई थी। पप्पू यादव की पार्टी का बिहार की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी आफ इंडिया के अलावा और भी दलों का गठबंधन था, जिसे पीडीए नाम दिया गया था। बिहार विधानसभा चुनाव सभी 243 निर्वाचन क्षेत्रों के लिए अक्टूबर या नवंबर 2025 में होने निर्धारित हैं। 2020 में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) ने राज्य में सरकार बनाई और नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बने। बाद में, अगस्त 2022 में, नीतीश कुमार ने जनता दल (यूनाइटेड) (JDU) का एनडीए से गठबंधन तोड़कर राष्ट्रीय जनता दल (RJD) के नेतृत्व वाले महागठबंधन के साथ सरकार बना ली। इसके बाद, जनवरी 2024 में, नीतीश कुमार ने फिर से राजद से गठबंधन तोड़कर भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए के साथ मिलकर सरकार बना ली। चुनाव रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने अगस्त 2024 में कहा था कि उनकी पार्टी, जन सुराज बिहार की सभी 243 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ेगी और कम से कम 40 सीटों पर महिला उम्मीदवारों को मैदान में उतारा जाएगा।

वोटर अधिकार यात्रा से बिगड़ेंगे सियासी समीकरण

वोटर अधिकार यात्रा की सफलता से उत्साहित कांग्रेसी अब बिहार में 70 की जगह 90 सीटों पर चुनाव लड़ने का विचार कर रहे हैं। महागठबंधन की मीटिंग में इस पर बात की जा सकती है। अगर ऐसा होता है तो लालू यादव और तेजस्वी यादव को बड़ा झटका लगेगा। बिहार में वोटर अधिकार यात्रा की समाप्त होते ही महागठबंधन के अंदर एक बार फिर से सीट शेयरिंग को लेकर घमासान देखने को मिल सकता है। इस यात्रा को सफल बनाने में राजद नेता तेजस्वी यादव ने अपनी पूरी ताकत झोंक रखी थी, लेकिन क्रेडिट पूरा कांग्रेस सांसद राहुल गांधी लेकर चले गए। आलम यह है कि कांग्रेसी कार्यकर्ता तो इसे सिर्फ राहुल गांधी की यात्रा बता रहे हैं। पार्टी नेता और कार्यकर्ता यात्रा की सफलता से फूले नहीं समा रहे हैं। कांग्रेस का यह आत्मविश्वास राजद अध्यक्ष लालू यादव और तेजस्वी यादव को भारी पड़ सकता है। सूत्रों के मुताबिक, कांग्रेस पार्टी अब महागठबंधन में कम से कम 90 सीटों पर चुनाव लड़ने का विचार कर रही है। कांग्रेस के रणनीतिकार अब बिहार में अपने लिए 90 सीट चाहते हैं। यात्रा से पहले ही कांग्रेस पार्टी ने बिहार की 90 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने की बात कही थी। पार्टी ने जिन 90 सीटों को चिन्हित किया था, उन्हें तीन कैटेगरी में विभाजित कर रखा है। ए कैटेगरी में 50 सीटें तो वहीं बी और सी कैटेगरी में 18-18 सीटों को रखा गया था। 4 सीटों को भी रिजर्व किया गया था। ए कैटेगरी में वो सीटें थीं, जिन पर कांग्रेस पार्टी अच्छा प्रदर्शन करती आई है। उस वक्त राजद ने सिर्फ 50 सीटें देने की बात कही थी। जिसके बाद बिहार कांग्रेस के नेता 70 सीटों पर अड़े हुए थे। इसके बाद पार्टी ने राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा को डिजाइन किया और इसके तहत 110 सीटों को कवर किया। अब कहा जा रहा है कि पार्टी इनमें से ही 90-100 सीटों पर अपना दावा ठोक सकती है।

2030 तक दुनिया का हर पांचवां व्यक्ति बोलेगा हिंदी

-प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी

हिंदी दिवस 14 सितंबर पर विशेष

भाषा संवाद संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। मनुष्य को इसलिए भी परमात्मा की श्रेष्ठ कृति कहा जाता है कि वह भाषा का उपयोग कर अपने भावों को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। यही विशेषता है, जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से भिन्न करती है।

हिंदी एक बहुआयामी भाषा है। यह बात इसके प्रयोग क्षेत्र के विस्तार को देखते हुए भी समझी जा सकती है। यह अलग बात है कि हिंदी भाषा की बात करते समय हम सामान्यतः हिंदी साहित्य की बात करने लगते हैं। इसमें संदेह नहीं कि साहित्यिक हिंदी, हिंदी के विभिन्न आयामों में से एक है, लेकिन यह केवल हिंदी के एक बड़े मानचित्र का छोटा-सा हिस्सा है, शेष आयामों पर कम विचार हुआ है और व्यावहारिक हिंदी की पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए तो और भी कम विमर्श हमारे सामने हैं। यदि हिंदी भाषा के आंतरिक इतिहास का उद्घाटन करना हो तो नामकरण ही उसका आधार बन सकता है। हिंदी, हिंदवी, हिन्दुई और दकिनी के विकास क्रम में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि अलग-अलग समय में एक ही भाषा के भिन्न नाम प्रचलित रहे हैं। हिंदी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। यह करीब 11वीं शताब्दी से ही राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है। उस समय भले ही राजकीय कार्य संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी में होते रहे हों, लेकिन संपूर्ण राष्ट्र में आपसी संपर्क, संवाद, संचार, विचार, विमर्श, जीवन और व्यवहार का माध्यम हिंदी ही रही है।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों ने राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से ही संपूर्ण राष्ट्र से सम्पर्क किया और सफलता हासिल की। इसी कारण आजादी के पश्चात संविधान-सभा द्वारा बहुमत से 'हिंदी' को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय किया था। जैसे-जैसे भाषा का विस्तार क्षेत्र बढ़ता जाता है, वो भाषा उतने ही अलग-अलग रूप में विकसित होना शुरू हो जाती है, यही हिंदी भाषा के साथ हुआ, क्योंकि यह भाषा पहले केवल बोलचाल की भाषा तक ही सीमित थी। उसके बाद साहित्यिक भाषा के क्षेत्र में इसे जगह मिली, और फिर समाचार-पत्रों में 'हिंदी पत्रकारिता' का विकास हुआ। अपनी अनवरत यात्रा के कारण स्वतन्त्रता के बाद हिंदी, भारत की राजभाषा घोषित की गई तथा उसका प्रयोग कार्यालयों में होने लगा और हिंदी का एक राजभाषा का रूप विकसित हुआ।

अगर हम आंकड़ों में हिंदी की बात करें तो 260 से ज्यादा विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। 64 करोड़ लोगों की हिंदी मातृभाषा है। 24 करोड़ लोगों की दूसरी और 42 करोड़ लोगों की तीसरी भाषा हिंदी है। इस धरती पर 1 अरब 30 करोड़ लोग हिंदी बोलने और समझने में सक्षम हैं। 2030 तक दुनिया का हर पांचवा व्यक्ति हिंदी बोलेगा। यूएई और फिजी जैसे देशों में हिंदी को तीसरी राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। हिंदी की देवनागरी लिपि वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है, ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में 18 हजार शब्द हिंदी के शामिल हुए हैं, और सबसे बड़ी बात कि जो तीन साल पहले अंग्रेजी इंटरनेट की सबसे बड़ी भाषा थी, अब हिंदी ने उसे पीछे छोड़ दिया है। गूगल सर्वेक्षण बताता है कि इंटरनेट पर डिजिटल दुनिया में हिंदी सबसे बड़ी भाषा है।

अक्सर ये प्रश्न पूछा जाता है कि हिंदी ही हमारी राजभाषा क्यों? इसका जवाब बहुत पहले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने दिया था। महात्मा गांधी ने किसी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिये जाने के लिए तीन लक्षण बताए थे। पहला कि वो भाषा आसान होनी चाहिए। दूसरा प्रयोग करने वालों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए। और तीसरा उस भाषा को बोलने वालो की संख्या अधिक होनी चाहिए। अगर ये तीनों लक्षण किसी भाषा में थे, हैं और रहेंगे, तो वो सिर्फ हिंदी भाषा ही है। आज भाषा को लेकर संवेदनशील और गंभीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। इस सवाल पर भी सोचना चाहिए कि क्या अंग्रेजी का कद कम करके ही हिंदी का गौरव बढ़ाया जा सकता है? जो हिंदी कबीर, तुलसी, रैदास, नानक, जायसी और मीरा के भजनों से होती हुई प्रेमचंद, प्रसाद, पंत और निराला को बांधती हुई, भारतेंदु हरिशचंद्र तक सरिता की भांति कलकल बहती रही, आज उसके मार्ग में अटकले क्यों हैं?

यदि हम सच में चाहते हैं कि हिंदी भाषा का प्रभुत्व राजभाषा के रूप में बना रहे, तो हमें इसके प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना होगा। सरकारी कामकाज में हिंदी को प्राथमिकता देनी होगी। ऐसे में भरोसा फिर उन्हीं नौजवानों का करना होगा, जो एक नए भारत के निर्माण के लिए तैयार हैं। जो अपनी जड़ों की ओर लौटना चाहते हैं। भरोसे और आत्मविश्वास से दमकते ऐसे तमाम चेहरों का इंतजार भारत कर रहा है। ऐसे चेहरे, जो भारत की बात भारत की भाषाओं में करेंगे। जो अंग्रेजी में दक्ष होंगे, किंतु अपनी भाषाओं को लेकर गर्व से भरे होंगे। उनमें 'एचएमटी' यानी 'हिंदी मीडियम टाइप' या 'वर्नाकुलर पर्सन' कहे जाने पर हीनता पैदा नहीं होगी, बल्कि वे अपनी भाषा से और अपने काम से लोगों का और दुनिया का भरोसा जीतेंगे। हिंदी और भारतीय भाषाओं के इस समय में देश ऐसे युवाओं का इंतजार कर है, जो अपनी भारतीयता को उसकी भाषा, उसकी परंपरा, उसकी संस्कृति के साथ समग्रता में स्वीकार करेंगे। जिनके लिए परंपरा और संस्कृति एक बोझ नहीं, बल्कि गौरव का कारण होगी। यह नौजवानी आज कई क्षेत्रों में सक्रिय दिखती है। खासकर सूचना-प्रौद्योगिकी की दुनिया में। जिन्होंने इस भ्रम को तोड़ दिया, कि सूचना-प्रौद्योगिकी की दुनिया में बिना अंग्रेजी के गुजारा नहीं है। ये लोग ही हमें भरोसा जगा रहे हैं। ये भारत को भी जगा रहे हैं। आज भरोसा जगाते ऐसे कई दृश्य हैं, जिनके श्रीमुख और कलम से व्यक्त होती हिंदी देश की ताकत है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजया पाठक द्वारा जेयन आफसेट वर्क्स, पुल बोगदा भोपाल 462023 (मप्र) से मुद्रित तथा एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल (मप्र) से प्रकाशित। संपादक : विजया पाठक।
RNI-MPBIL/2011/39805 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एट के तहत जिम्मेदार। (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।)